कीट पंतगों और बीमारियों के कारण फसलों को क्षति

1714. **श्री जनेश्वर मिश्र:** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि कीट-पतंगों और अन्य बीमारियों से करोड़ों रुपये की फसल की हानि होती है;

(ख) यदि हां, तो क्या यह भी सच है कि यदि इसका निवारण कर दिया जाए तो भारत में अनाज भरपूर मात्रा में उपलब्ध होंगे; और

(ग) यदि हां, तो इन कीट-पतंगों द्वारा कुल कितना अनाज खा लिया जाता है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोम पाल): (क) से (ग) फसल उत्पादन में हानि कीटों और रोगों के कारण होती है जो प्रत्येक फसल और प्रत्येक क्षेत्र में भिन्न-भिन्न हैं। इसलिए कीटों और रोगों से फसलों की रक्षा करना ही उत्पादन बढ़ाने का एक सही तरीका है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसार कीटों (कृमियों, कृन्तकों, रोगों, खरपतवारों आदि) द्वारा फसल का नुकसान संभावित उपज का 10 से 30 प्रतिशत की रेंज में है।

Review of Price-Rise of Urea

1715. SHRI KRISHNA KUMAR BIRLA: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether Government have increased the price of urea barely 30 days before the presentation of general budget;

(b) if so, the reasons and justification thereof;

(c) whether the farmers have been affected at large and such a step of Government is going to affect on price-rise of all commodities;

(d) if so, whether Government propose to review its decision on the price-rise of urea; and

(e) if so, by when and if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI SOMPAL): (a) and (b) The price of urea has been increased from Rs. 3660 per MT to Rs. 4000 per MT with effect from 29th January 1999. The increase was warranted both from the point of view of fiscal sustainability and balanced nutrient application.

(c) The impact of the price increase on the cost of cultivation is likely to be less then one percent while the impact on the general price level would be negligible.

(d) and (e) As the urea price rise was warranted both from fiscal and agronomic considerations and as it is not likely to have any significant adverse effect, it is not proposed to review the decision.

बीजों की उन्नत किस्में

1716. **श्री राज मोहिन्दर सिंह:**
श्री कपिल सिब्बल:

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा गत तीन वर्षों के दौरान अनेकों उन्नत किस्म के बीजों की खोज की गई है;

(ख) यदि हां, तो ऐसे बीजों का ब्यौरा क्या है और वे किन-किन खाद्यान्नों से संबंधित है;

(ग) क्या इनकी गुणवत्ता व उत्पादन क्षमता मौजूदा फसल की गुणवत्ता व उत्पादन मात्रा से अधिक है; और

(घ) यदि हां, तो इन बीजों की गुणवत्ता और उत्पादन क्षमता का आकलन क्या है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोमपाल): (क) जी, हां। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा गत तीन वर्षों के दौरान बीजों की अनेक उन्नत किस्मों का विकास किया गया है।

(ख) खाद्यान्नों की इन उन्नत किस्मों के नाम विवरण-I में दिए गए हैं। (नीचे देखिए)

(ग) इन बीजों की उत्पादन क्षमता पहले से उपलब्ध किस्मों की तुलना में बेहतर है।

(घ) इन बीजों की गुणवत्ता एवं उत्पादन क्षमता संबंधी आकलनों का ब्यौरा विवरण-II में दिया गया है।

विवरण—I

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा खाद्यान्न फसलों की विकसित किस्मों के नाम (गत तीन वर्षों के दौरान जारी):—

फसल का नाम	किस्म का नाम
गेहूं	एच०पी० 1716 (जगदीश), एच०पी० 1744 (राजेश्वरी), विदिशा (डी०एल० 788-2), एच०एस० 365, एच०आई० 8498 (दुरुम) एच० डब्ल्यू० 1085 (धवानी) और एच०डी 2687 (श्रेष्ठ)
चावल	पूसा 677 और पूसा 834
मक्का	पूसा अगेती संकर मक्का-1, पूसा अगेती संकर मक्का-2 और कम्पोजिट शक्ति-1
बाजरा	पूसा बाजरी 266
जौ	डी०एल० 88 (माल्टी)
चना	बी०जी० 391, पूसा 1003 और पूसा हरा चना
मसूर	पूसा वैभव

विवरण—II

खाद्यान्न फसलों की किस्मों की प्रमुख विशेषताएं:

गेहूं

एच पी 1761 (जगदीश): यह किस्म उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्रों (पूर्वी उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, बिहार, प० बंगाल और असम मेघालय, अरूणाचल प्रदेश तथा अन्य पूर्वी राज्यों के मैदान) की सिंचित एवं समय से बोई जाने वाली परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। यह अगमारी और पर्ण रतुआ के प्रति सहनशील है। उपज क्षमता 60 क्विंटल/है० है और इसकी उपज वृद्धि का प्रतिशत एच०पी० 1731 किस्म के मुकाबले 2.5 प्रतिशत अधिक है।

एच०पी० 1744 (राजेश्वरी): यह किस्म उत्तर-पूर्वी मैदानी इलाकों की सिंचित तथा पछेती परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। यह किस्म रतुआ एवं पर्ण अंगमारी के प्रति सहनशील है। इसकी उपज क्षमता 51 क्विंटल/है० है और इसकी उपज वृद्धि का प्रतिशत सोनालिका किस्म की तुलना में 6.8 प्रतिशत अधिक है।

डी०एल० 788-2 (विदिशा): मध्यम क्षेत्र (गुजरात, उत्तर प्रदेश का झांसी मंडल, राजस्थान के कोटा और उदयपुर मंडल) की सिंचित एवं पछेती परिस्थितियों के लिए यह किस्म उपयुक्त है। तना रतुआ के प्रति सहनशील होने के साथ-साथ इस किस्म में गर्मी सहने की भी क्षमता है। इस किस्म की उपज क्षमता 52 क्विंटल/है० है और यह लोक-1 किस्म के समतुल्य है।

एच०एस० 365: यह किस्म उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों (जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, सिक्किम, प० बंगाल; असम, मेघालय इत्यादि के पहाड़ी क्षेत्र) की समय पर बुवाई एवं बारानी परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। यह किस्म पीले रतुए के प्रति सहनशील तो है ही, पैदावार भी अधिक देती है और गहाई में भी आसान है। इसकी उपज क्षमता 27 क्विंटल/है० है। इसकी उपज वृद्धि का प्रतिशत एच०पी० डब्ल्यू० 42 किस्म के मुकाबले 20 प्रतिशत अधिक है।

एच० आई० 8498 (दुरुम): केन्द्रीय क्षेत्र की सिंचित, समय पर बोई जाने वाली परिस्थितियों के लिए यह किस्म उपयुक्त है। इस किस्म से उच्च पैदावार मिलती है। इसके दाने निर्यात के लिए उपयुक्त बेहतर किस्म के होते हैं और यह रतुआ के प्रति सहनशील है। उपज क्षमता लगभग 58 क्विंटल/है० है और उपज वृद्धि का प्रतिशत राज- 1555 किस्म की तुलना में लगभग 4.5 प्रतिशत अधिक है।

एच० डब्ल्यू 1085 (धवानी): दक्षिणी पहाड़ी क्षेत्रों (तमिलनाडु एवं केरल के पहाड़ी क्षेत्रों) की समय से बोई जाने वाली, सीमित सिंचित परिस्थितियों के लिए यह किस्म उपयुक्त है। एच० डब्ल्यू 1085 तना पर्ण एवं पट्टीदार रतुआ के प्रति अत्यधिक सहनशील है और रतुआ के फैलाव को एक बेरियर के रूप में रोकता है। इसकी उपज क्षमता 41 क्विंटल/है० है और उपज वृद्धि का प्रतिशत वृद्धि एचत यू० 5318 किस्म के मुकाबले 18 प्रतिशत अधिक है।

एच० डी० 2687 (श्रेष्ठ): यह किस्म उत्तर-पश्चिमी मैदानी इलाकों (पंजाब, हरियाणा, प० उत्तर प्रदेश, दिल्ली और राजस्थान के भाग) इससे पैदावार अधिक होती है और यह किस्म रतुआ करनाल बंट, फसल गिरने और गर्म तापमान के प्रति सहनशील है। इसकी उपज क्षमता लगभग 63 क्विंटल/है० है और एच०डी० 2329 किस्म

के मुकाबले इसकी उपज वृद्धि का प्रतिशत 9 प्रतिशत अधिक है।

चावल

पूसा 677: पूसा 677 उच्च उपजशील अर्ध-बौनी और शीघ्र पकने वाली किस्म है। यह किस्म तमिलनाडु कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश राज्यों की सिंचित एवं सीधे ही बीज बोने वाली परिस्थितियों के लिए जारी की गई है। इसका दाना मध्यम बेलनाकार है और यह किस्म मिलीकरण एवं पकाने के लिए स्वीकार्य गुणवत्ता की है। इसकी औसत उपज क्षमता लगभग 53 क्विंटल/है० है। इस किस्म की माध्य वृद्धि (आनन्द और तुलसी) किस्मों की तुलना में 8 से 28 प्रतिशत अधिक है।

पूसा 834: यह किस्म जल्दी पकने वाली अर्ध-बौनी है जो कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीधे बीज बोने वाली और बारानी परिस्थितियों में रोपाई करने के लिए जारी की गई है। यह प्रमुख नाशी कीटों और पौड़कनाशियों के प्रति सहनशील है। सिंचित परिस्थितियों में इसकी उपज 60 से 70 क्विं/है० तक अदलती-बदली रहती है और इसकी उपज वृद्धि अन्य किस्मों के मुकाबले 7.6 प्रतिशत है।

मक्का

पूसा अगेती संकर मक्का-1 और पूसा अगेती संकर मक्का-2: मक्का की जल्दी पकने वाली अधिक पैदावार देने वाली एकल संकर किस्म है। ये संकर किस्में मक्के की दूसरी संकर किस्मों जो 100 से 120 दिन में पकती है, की तुलना में 80-85 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। ये संकर किस्में भारत के गंगा के मैदानी इलाकों की गहन फसल प्रणाली के लिए उपयुक्त है। उसी प्रकार पकने वाली अन्य किस्मों की तुलना में इन संकरों की उपज श्रेष्ठता 10 प्रतिशत अधिक है।

कम्पोजिट शक्ति-1: यह एक बेहतर गुणवत्ता वाली प्रोटीन युक्त मक्के की कम्पोजिट किस्म है जिसकी सिफारिश देशभर में उगाने के लिए की गई है। इसकी उपज 35 से 40 क्विंटल/है० की सीमा में होती है और 85-90 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। इसमें लायसिन और ट्रिप्टोफॉन उच्च मात्रा में पाया जाता है और इसकी उपज क्षमता जारी की गई शक्ति किस्म की तुलना में 9-8 प्रतिशत अधिक है।

बाजरा

पूसा बाजरी 266: यह किस्म एक संयुक्त किस्म है जो राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब के लिए जारी की गई है। पूसा बाजरी 77 दिनों में पककर तैयार हो जाती है और इससे औसतन 22 क्विंटल/है० अनाज की उपज मिलती है और 5.3 टन/है० चारा प्राप्त होता है। यह किस्म खासकर राजस्थान, गुजरात और हरियाणा के कम वर्षा वाले क्षेत्रों में तेजी से बढ़ने वाली एक संयुक्त किस्म है। यह रोमिल फफूंद की प्रतिरोधी किस्म है। इसकी उपज वृद्धि का प्रतिशत आई०सी०एम०वी०-115 और आई०सी० टी०पी०—8203 की तुलना में क्रमशः 9 और 25 प्रतिशत अधिक है।

जौ

बी०एल०-88 (माल्टी): देश के प्रायद्वीपीय क्षेत्रों के लिए जौ की एक 6 पंक्तियों वाली किस्म जारी की गई है जो अधिक पैदावार (5-6 टन/हैक्ट०) देती है, बेहतर गुणवत्ता वाली माल्टी और बहु प्रतिरोधी है। जल्दी पकने के कारण इसे भिन्न-भिन्न सस्य जलवायुवीय परिस्थितियों में व्यापक रूप से अपनाया गया है।

चना

बी०जी० 391: यह एक मोटे दानों वाली देसी चने की किस्म है जो मध्य प्रदेश, बुंदेलखण्ड (उ०प्र०), महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान के हिस्सों के लिए जारी की गई है। बी०जी० 391 से औसतन 24 क्विंटल/है० की उपज प्राप्त होती है। यह दोनों ही प्रकार की बारानी एवं सिंचित परिस्थितियों के लिए तो उपयुक्त है ही साथ ही दोहरी फसल प्रणाली के लिए भी यह उपयुक्त है। यह किस्म मुर्झान तथा जड़ रोगों की साधारण रूप से प्रतिरोधी है।

पूसा 1003: यह काबुली चने की एक मोटे दाने वाली (25 ग्रा०/100 दाने) किस्म है। इस किस्म की औसत उपज 20 क्विंटल/है० है।

पूसा हरा चना: यह चने की एक किस्म है जिसकी सिफारिश उत्तर के मैदानी इलाकों के लिए की गई है। पूसा हरा चना परिपक्व होने के बाद भी हरा बना रहता है और पकने में कम समय लेता है। इसे नाश्ते में अंकुरित दानों के रूप में, सामान्य भाजी, सलाद और विशिष्ट भोजन के रूप में खाया जा सकता है और चावल के पुलाव में डाला जा सकता है। इसके दानों में 21.25 प्रतिशत प्रोटीन, 40.25 प्रतिशत् वसा और 4.58 प्रतिशत शर्करा पायी जाती है। इसके लिए अधिक से अधिक 2 सिंचाई की जरूरत होती है और इसे हल्की व भारी बालुई दुमट मिट्टी में उगाया जा सकता है। यह

140 दिनों में पक कर तैयार हो जाता है और इसकी उपज क्षमता 17 क्विंटल/है० है।

मसूर

पूसा वैभव: यह किस्म छोटे बीजों वाली है और उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्रों के लिए जारी की गई है। यह किस्म रतुआ व तना छेदक की प्रतिरोधी है। इस किस्म की औसत उपज 17.8 क्विंटल/है० है।

कृषि आधारित उद्योगों का विस्तार

1717. श्री राज मोहिन्दर सिंह:
श्री कपिल सिब्बल:

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार द्वारा देश में दुग्ध उत्पादन उद्योग, पशुपालन उद्योग जैसे कृषि आधारित उद्योगों का विकास तथा विस्तार करने हेतु कोई योजना तैयार की गई है;

(ख) यदि हां, तो सरकार ने किन-किन उद्योगों के लिए क्या-क्या विकास व विस्तार योजनाएं तैयार की हैं; और

(ग) प्रत्येक कृषि-आधारित उद्योग के लिए चालू वित्तीय वर्ष में कितनी-कितनी राशि वार्षिक बजट में आबंटित की गई थी और दिसम्बर, 1998 तक इसमें से कितनी राशि व्यय किए जाने का आकलन किया गया है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोमपाल): (क) और (ख) योजना के दौरान सरकार की कार्यनीतियों और नीतियों का जोर गोपशु और भैंसों के आनुवंशिक उन्नयन पर दिया गया है ताकि उनके उत्पादकता स्तर बढ़ाए जा सकें और दुग्ध उत्पादन में वृद्धि की जा सके। ऑपरेशन फ्लड कार्यक्रम की सफलता के बाद विभाग ने गैर ऑपरेशन फ्लड, पहाड़ी और पिछड़े क्षेत्रों में एकीकृत डेयरी विकास परियोजना और राष्ट्रीय गोपशु और भैंस प्रजनन परियोजना तैयार की है और इन योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

(ग) इन योजनाओं के अंतर्गत चालू वर्ष म वार्षिक योजना में आबंटित राशि दिसम्बर, 1998 तक खर्च की गई राशि का ब्यौरा नीचे दिया गया है:

करोड़ रुपए में

योजना का नाम	आबंटित राशि 1999-2000	खर्च की गई राशि दिसम्बर, 1998
1. गैर-ऑपरेशन फ्लड, पहाड़ी और पिछड़े क्षेत्रों में समेकित डेयरी विकास परियोजना	45.00	9.70
2. गोपशु और भैंस प्रजनन संबंधी राष्ट्रीय परियोजना	47.00	6.04*

* हिमित वीर्य प्रौद्योगिकी विस्तार, संतति परीक्षण और राष्ट्रीय सांड उत्पादन कार्यक्रम की घटक योजनाओं के तहत।

कृषि संबंधी नवीन अनुसंधानों के लाभ

1718. श्री कपिल सिब्बल:
श्री बलवन्त सिंह रामूवालिया:

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार प्रयोगशालाओं में किए गए कृषि संबंधी नवीनतम अनुसंधानों के लाभ देश के कृषकों तक पहुंचाने के लिए स्थायी व्यवस्था कायम करने पर विचार कर रही है; और

(ख) यदि हां, तो इस व्यवस्था की रूपरेखा क्या है; और यदि नहीं, तो उसके क्या कारण है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोम पाल): (क) और (ख) किसानों तक कृषि अनुसंधान के लाभ पहुंचाने के लिए निश्चित ही स्थायी व्यवस्था मौजूद है तथा स्थायी व्यवस्था की रूपरेखा में निम्नलिखित शामिल हैं:—

राज्य विस्तार एजेंसियां अनुसंधान प्रणाली द्वारा विकसित नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने के संबंध में किसानों को शिक्षित बनाने के लिये खेत पर दिशा-निर्देश के अलावा, प्रशिक्षण, प्रदर्शन तथा प्रदर्शन दौरों का आयोजन करती है।

प्रदर्शनी, किसान मेला, क्षेत्र दिवस, सामूहिक बैठक तथा प्रिन्ट व इलेक्ट्रानिक संचार माध्यमों